११८. ध्याइये, अतीरुचीर, मधुमधुर

ध्याइये, अती रुचीर मधुमधुर
हारे हिये पीर, मेहेरश्री ॥धृ.॥

सत्यम् शिवम् सुंदरम् श्री मेहेर
दानी दयालू कृपालू मेहेर
शान्ती चिदानंद मेहेरश्री ॥१॥

ध्यानी जपो एकही मंत्र बोले
प्रीती करो और ना जोग बोले
सर्वस्वका सार मेहेरश्री ॥२॥

जागो उठो द्वार हिरदयके खोलो
दामन मधुसूदना हाथ धरलो
आये प्रभू देख मेहेरश्री ॥३॥

Scanned by CamScanner